

men, übertréten; ein Versäumniss sich zu Schulden kommen lassen: आशामहे व्यतिक्रम्य R. 2, 30, 32. धर्मव्यतिक्रात् 4, 17, 35. यदि तस्य व्यतिक्रात् भवेत् 5, 84, 11.

— समति 1) vorübergehen, weitergehen; wegschreiten über, vorüberkommen an, durchschreiten: नले तु समतिक्रात् MBh. 3, 2851. वनानि सरितः शैलान्संरामि च विहायसा । त्रिप्रं समतिचक्राम R. 3, 60, 16. 2, 14, 27. तीरिदं समतिक्रम्य 4, 40, 48. MBh. 2, 1038. समतिक्रमन् 3, 11345. 13709. एते गच्छन्ति बहवः पन्थानो दक्षिणापथम् । अत्रस्तीमन्तवत्तं च समतिक्रम्य (über) पर्वतम् ॥ 2317. दूरे धष्टः पटस्तव । योजनं समतिक्रात् (ungenau vom herabgefallenen Kleide gesagt, was vom Fahrennden gilt) नाकर्तुं शक्यते पुनः ॥ 2812. — 2) heraustreten: वेष्मनः समतिक्रम्य R. 6, 31, 2. — 3) verstreichen, verfließen: दशाहे समतिक्रात् Vet. 10, 1. — 4) über eine Zeit hinwegkommen, eine best. Zeit verstreichen lassen: द्वा मासौ समतिक्रम्य पास्यामि रूधिरं तव R. 5, 56, 79. — 5) übertreffen: वृषेण समतिक्रात् पृथिव्यां सर्वयोषितः MBh. 3, 2124. — 6) vernachlässigen, nicht beachten, versäumen, übertréten: समतिक्रम्य मातरं पितरं गुरुम् R. 2, 30, 33. Vidy. 8, 2. नास्ति शक्तिः पितृर्वयं समतिक्रमितुं मम R. 2, 21, 30. समयः समतिक्रात् भवत्संदर्शने मया MBh. 1, 7768.

— अधि hinaufsteigen auf, zu (acc.): सकृन्नात्तनियोगात्स पार्थः शक्रासनं गतः । अथ्यक्रामदमेयात्मा द्वितीय इव वासवः ॥ MBh. 3, 1777. अधिक्रमत्यङ्घ्रिभिराकृतो बलात्सभो सुधर्मी मुरसत्तमोचिताम् Bhāg. P. 1, 14, 38. — Vgl. अधिक्रम, अधिचङ्क्रम.

— अनु 1) nachfolgen; verfolgen (einen Weg u. s. w.), seine Schritte wohin richten, nachgehen: अद्वा रतिर्भक्तिरनुक्रमिष्यति Bhāg. P. 3, 23, 25. अनु प्रत्नासं आयवः पदं नवीयो अक्रमः RV. 9, 23, 2. 114, 1. गणं गणं सुशस्तिभिः । अनु क्रामेन धीतिभिः 5, 53, 11. AV. 3, 7, 2. मर्ह्यभिर्भुक्तात्तं धर्मपन्थानमास्थितः R. 5, 47, 6. तीर्थयात्रामनुक्रामन्प्राप्तो ऽस्मि कुरुडाङ्गलान् MBh. 3, 356. नाराचाभिकृतः शीघ्रमात्मत्राणपरो मृगः । गिरिपादपसंवाधो सो ऽन्वक्रामन्महाद्वीम् ॥ Mārk. P. 21, 7. सर्वथा सदृशं सीते मम स्वस्य कुलस्य च । व्यवसायमनुक्रात्ता क्रात्ते त्वमतिशोभनम् ॥ R. 2, 30, 41. ज्येष्ठमनुक्रम्य = अनुज्येष्ठम् Vop. 6, 61. — 2) der Reihe nach durchgehen, aufzählen: अनुक्रामन्तश्च विकारान्व्याख्यास्यामः Çāñkh. Çr. 1, 16, 11. 22. तान्यतो ऽनुक्रमिष्यामः Nir. 9, 1. यच्चानुक्रात्तं यच्चानुक्रंस्यते Pat. zu P. 1, 1, 72. Sch. zu P. 1, 4, 83 und 2, 1, 3. Bhāg. P. 5, 26, 7. अनुक्रमिष्ये 2, 6, 45. — 3) mit einem Inhaltsverzeichnis versehen: स संक्षिप्तो भागवतो क्वानुक्रम्य च Bhāg. P. 1, 7, 8. im Inhaltsverzeichnis (अनुक्रमणी) angeben: तथा चानुक्रात्तम् (so ist zu lesen) Śāṅ. zu RV. 4, 103. — Vgl. अनुक्रम, अनुक्रमण.

— समनु vollständig hindurchschreiten, durchlaufen: अधस्तात्तरलोकास्य यावतीर्यातनास्तु ताः । क्रमशः समनुक्रम्य पुनर्त्रात्रजेर्कुचः ॥ Bhāg. P. 3, 30, 35.

— अप act. (ep. auch med.) 1) weggehen, sich davon machen, davonlaufen, weichen, sich entfernen von RV. 10, 164, 1. AV. 7, 103, 1. 8, 1, 21. 12, 5, 6. 11. TS. 2, 1, 1, 3. अप वा एतस्मादिन्द्रियं वीर्यं क्रामति 2, 4, 2. 6, 2, 1. 3. Çat. Br. 1, 5, 2. 6. 3, 4, 1, 17. तत एव नापक्रामेत् 1, 5, 2. 6. 3, 5, 1, 17. Kauç. 4. पञ्चममिन्द्रियमस्यापाक्रामत् ved. P. 5, 2, 50. Sch. अपक्रामति Mārk. 33, 19. अपक्रामतु 110, 19. अपचक्राम MBh. 1, 177. 6705. अपाक्रमतेन रथेन 3, 16581. R. 6, 76, 19. अश्वा भूवापचक्रमे Bhā. Dev. in Z. f. vgl.

H. Theil.

Spr. 1, 442. MBh. 1, 6619. अपक्रम्य 6084. R. 3, 7, 10. अपक्रामितुम् Mārk. 33, 12. 35, 4. अपक्रात् MBh. 3, 2362. 11098 (p. 572). R. 3, 43, 24. 44, 18. 6, 76, 20. Mārk. P. 21, 49. ब्राह्मणानामत्तरमपक्रात्: (भाण्डुकः) Pāñāt. 198, 1. अपक्रात्तवान् Kathās. 5, 26. अपाक्रामत्तस्मादेशात् MBh. 1, 6717. Draup. 4, 22. तस्मादेशादपाक्रामत् R. 2, 14, 56. अपक्रमे 1, 21, 6. तस्य मार्गादपाक्रामन् MBh. 3, 1493. तत्रात् 8313. त्वं तु सत्यादपक्रात्तं हनिष्यामि R. 4, 30, 21. अपक्रात्तमेध Çat. Br. 1, 2, 2, 9. verstreichen: पूर्वः परार्थो ऽपक्रात्तो ह्यपरो ऽथ प्रवर्तते Bhāg. P. 3, 11, 33. कालस्तपस्यतां कश्चिदपाक्रामत् (v. l. अतिचक्राम) MBh. 3, 16712. — 2) abschreiten d. h. durch Schreiten trennen: तस्येवौ प्राणापानावपक्रामामि Kauç. 49. — des. अपचिक्रमिषति Çat. Br. 4, 6, 9, 1. 3. 5. 16. — Vgl. अपक्रम u. s. w.

— अ-अप weggehen nach, zugehen auf: स्वं देवास्य तत्प्रतिमामिवाभ्यपक्रामति Çat. Br. 5, 4, 2, 11. स नो माभ्यपक्रमीः AV. 12, 2, 18.

— व्यप abtreten, sich entfernen: प्रतात्त्य च तयोः पौदै व्यपाक्रामत् R. 2, 87, 21.

— अभि act. med. 1) hinzutreten, zugehen auf, losgehen auf, angreifen, betreten RV. 1, 80, 5. अभि सूचः क्रमते 144, 1. 9, 40, 1. 86, 14. अभ्यक्रमीदयो ऽङ्का वाजं नैतशः 108, 2. स्पृधो अदेवीरुभि च क्रामां विश अदेवोरभ्यङ्गवाम 6, 49, 15. Çat. Br. 14, 9, 4, 7. Pār. Grh. 2, 5, 3, 14. Kauç. 4. पूर्व पूर्व वाभिक्रामम् (absol.) Kāṭj. Çr. 3, 2, 21. 6, 8, 4. तमभिक्रम्य सर्वे ऽथ वयं चार्यामहे वसु MBh. 3, 8613. ब्रह्माणम् — प्रदक्षिणामभिक्रम्य सर्वे प्राञ्जलयः स्थिताः 13, 6047. अभिचक्राम R. 2, 32, 4. 84, 10. 3, 2, 16. 52, 4. स्ववाटमभिचक्राम 1, 63, 38. अभिचक्राम लोकान्स राज्ञाम् Indr. 1, 41. सुडर्ममांस्ते सुबहून्सुखेनैवाभिचक्रामुः MBh. 3, 11557. ते सरांसि गिरिन्सर्वान्सकटाणि वनाणि च । दरीर्दुर्गाश्च शैलाश्च कृत्स्नास्तानभिचक्रामुः ॥ R. 4, 47, 3. अभिचक्राम काकुत्स्थः शर्मङ्गाश्रमं प्रति 3, 9, 15. राजवेषम प्रविश्य च । कत्याः सप्ताभिचक्राम (wohl अतिचक्राम zu lesen) 2, 57, 17. — 2) darangehen, anfangen (mit Hersagen, Lesen u. s. w.): द्वायामभिक्रम्य (पदायाम्) RV. Pār. 10, 1. प्रचोदितो ऽभिक्रमते यथास्य क्रमः 13, 5, 6. 11, 7. sich anschicken, mit dem dat. eines nom. act.: गमनायाभिचक्राम R. 1, 77, 18. — caus. in die Nähe bringen: आकृत्यैवैनमभि क्रमयति TS. 5, 1, 2, 2. — Vgl. अभिक्रम fgg.

— समभि hinzutreten: त्रमापो मृगव्याधः समभिक्रम्य वेगतः MBh. 3, 2389.

— अव act. 1) sich wegbegeben, entfliehen: शीघ्रमवक्रामतु भवान् Mārk. ed. Calc. 210, 21 (Stenzler: अपक्रामतु). Vgl. अवक्रामिन्. — 2) niedertreten, überwältigen: अवक्रामन्तः प्रपदिर्मित्रान् RV. 6, 75, 7. VS. 2, 8, 11, 15. AV. 4, 11, 10. मा नो डुराध्योर् मार्शिवामो अव क्रामः (P. 6, 1, 116) RV. 7, 32, 27. AV. 13, 1, 20. 19, 36, 5. वज्रेणैवैनमवक्रामति Çat. Br. 13, 1, 2, 9. 6, 3, 2, 7. — caus. hinuntersteigen lassen: अपो ऽवक्रमयन् (यजमानम्) Kāṭj. Çr. 10, 8, 21.

— अन्व nach der Reihe hinabsteigen, etngehen in: कृदयमेवान्वक्रामति Çat. Br. 14, 7, 2, 1. 3.

— आ 1) herbeikommen, hintreten zu, hinkommen zu, wohin gerathen; beschreiten, betreten, besuchen: आयं गौः पृश्निर्क्रमीत् RV. 10, 189, 1. N. 13, 13. (यावत्) आक्रम्याक्रम्य रूपं कटिति न जग्वा लुप्यते प्रेयसीनाम् Bhāṭṭ. 1, 69. आ वाजं वाज्यक्रमीत् RV. 9, 64, 29. 74, 8. ता यज्ञमा प्रुचिभिश्चक्रमाणा 6, 62, 2. आक्रममाण TS. 2, 4, 2, 2. 5, 1, 2, 6. आक्रामन्नागभवने